अध्याय–प्रथम

पंजाब की संगीत परंपरा : परिचयात्मक अध्ययन

पंजाब की संगीत परंपरा का भारतीय संगीत में विशेष स्थान है क्योंकि यह परंपरा उत्तर भारतीय संगीत की केंद्रीय परम्परा के रूप में उन्नत और विकसित हुई। इस परंपरा का सिंध की सभ्यता और वैदिक संगीत से लेकर मुगल काल तक विकास विशेष रुप में महत्वपूर्ण है।यह परम्परा अपनी प्रसिद्धि से परिचित, खुशहाल, विभिन्न विशेषताओं के कारण विश्व विख्यात और अपनी समस्त विभूतियों को एक साथ समेटे हुए यदि कहीं दिखाई देती है तो वह पांच नदियों से सिंचित पूज्य एवं पवित्र पंजाब की भूमि है। पांच नदियों से सिंचित, लहराती फसलों से भरपूर, वास्तव में किसी स्वर्ग से कम नहीं है।भारत देश के सभी क्षेत्र अपनी सभ्यता एवं संस्कृतिक विशेषताओं से अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है। इसी की भांति भारतवर्ष का मुकुट मणि पंजाब अपनी संपन्नता, सभ्यता एवं संस्कृति के कारण भारतीय संस्कृति का विशेष अंग है और अपनी संगीत परम्परा की विशेषता एवं लोकप्रियता के परिणामस्वरूप भारतीय संगीत को विश्व विख्यात किए हुए है। जो प्रदेश जितना समृद्ध और शक्तिशाली एवं सुख सुविधाओं से संपन्न होगा उतना ही उस क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति अपनी विभिन्न कलाओं साहित्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति पाकर उस क्षेत्र की संस्कृति को जीवन प्रदान करती है। इसके विपरीत जो प्रदेश अभाव ग्रस्त पिछड़ा हुआ और असभ्य होगा उस प्रदेश की संस्कृति भी रंक होती है।वस्तुतः पंजाब की सभ्यता एवं संस्कृति भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता से पृथक नहीं है लेकिन इसकी अपनी मौलिक विशेषताएं हैं जिन्हें इस क्षेत्र की स्वयं अर्जित उपलब्धियां कह सकते हैं जो अपनी विलक्षणता एवं विशेषता के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति में अहम स्थान हासिल किए हुए है। इस परंपरा के साथ परिचयात्मक संबंध स्थापित करने से पूर्व पंजाब के शाब्दिक अर्थ भौगोलिक स्थिति, ऐतहासिक पृष्ठभूमि आदि विष्यों के बारे में जान लेना अनिवार्य है।

1.1 पंजाब का शाब्दिक अर्थ :

पंजाब पंज आब पदों के सुमेल से बना है जिस का भाव पांच पानी है डा. गीता पेंतल अनुसार ''पंजाब 'पंज', 'आब' पदों का योगिक शब्द है पंज और आब दोनों फारसी भाषा के शब्द हैं उनके क्रमशः 'पॉच', 'पानी' है। अस्तु पंजाब का अर्थ हुआ पांच पानी से सीचीं हुई धरती''[1] संस्कृत में पंज को पंच और आब के अनुरूप आप का भाव पानी होता है तो कह सकते हैं कि विशुद्ध संस्कृत में इसका नाम 'पंचाप' हुआ। भारत में जब अरबों का आगमन हुआ तो इस भूमि का नाम 'पंचाप' ही रहा क्योंकि अरबी भाषा में 'च' और 'प' की ध्वनियां नहीं है और अरबी भाषा में 'च' और 'प' की ध्वनि के अनुरूप 'ज' और 'ब' का प्रयोग किया जाता है। इस तरह यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मूल शब्द 'पंचाप' का शुद्ध उच्चारण ना कर पाने और अरबी भाषा के प्रभाव फलस्वरूप पंजाब कहा जाने लगा होगा। इसके अतिरिक्त फारस या अरबों का अधिपत्य होने पर अरबी प्रभाव पड़ने के कारण अरबी फारसी में भी पंजाब शब्द रूप ही प्रचार में रहा। पंजाब शब्द का प्रचार मुसलमानों के आगमन के पश्चात ही भारत में प्रचलित हुआ ऐसा मानना न्याय संगत होगा। पंजाब नाम को लेकर और भी कई मत हैं पंजाब के नामकरण के विषय में प्रसिद्ध पत्रकार खुशवंत सिंह ने अपने विचार प्रकट किए हैं ''जब आर्य भारत आए पंजाब में 7 नदियां बहती थी इसलिए इन्होंने इसका नाम सप्त सिंधु रख दिया जिसका अर्थ सात समुन्दरों की भूमि है। फारसी लोगों ने इसे आर्यों से ग्रहण किया और इसे 'हफ्ता–हिंदू' के नाम से पुकारा कुछ समय बाद जब सरस्वती नदी का आलोप हो गया तो लोगों ने सिंधु नदी को भी इस श्रृंखला से हटा दिया क्योंकि यह केवल राज्य की सीमा क्षेत्र को ही रेखांकित करती थी और इसका नाम पांच नदियों के आधार पर पांतपितोमिया या पंजाब रख दिया, जिसका अर्थ है पांच नदियों का प्रदेश''[2]

इसके अतिरिक्त दो अन्य नाम भी हैं जिनको प्राचीन पंजाब की संज्ञा दी गई इसी संदर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार खुशवंत सिंह आगे लिखते हैं–

---

1. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–3.
2. खुशवंत सिंह, हिस्टरी आफ सिक्ख इतिहास, पृ–5.

"दो और नाम भी हैं जिनसे प्राचीन पंजाब को जाना जाता था (मद्र देश)–मंदिरों की भूमि, इसका नाम पांडवों की माता माद्री के नाम पर पड़ा था। मद्र प्रदेश की सीमा व्यास से चिनाब या जेहलम तक थी इसकी राजधानी साकला में थी संभवत आज का साकला सम्बधि विचित्र नाटक में भी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने पंजाब के लिए मद्र देश शब्द का प्रयोग किया है।

(उत्तरापथ) उत्तर का देश, यह नाम बौद्ध साहित्य में मिलता है।"[1]

"प्राचीन काल में पंजाब के अन्य नाम भी हुए हैं जैसे ब्रहव्रत, सप्त सिंधु, पंच नद आदि। ऋग्वेद काल में भी और इससे पूर्व पंजाब को ब्राह्मवत और सप्त सिंधु कहा जाता था।"[2]

"महाकाव्य और पुरानों में पंजाब को पंच नद कहा गया है जिसका अर्थ है पांच नदियों की धरती।"[3]

अंतः हम कह सकते हैं पांच पानियों से सिंचित भूमि पंजाब नाम से प्रसिद्ध हुई जो वर्तमान में एक सितारे की भांति विश्व विख्यात है।

1.2 भौगोलिक स्थिति :

प्राचीन काल से पंजाब के सीमा क्षेत्र में परिवर्तन होते रहे हैं क्योंकि पंजाब प्रदेश सीमावर्ती क्षेत्र होने की वजह से विदेशी हमलावरों का सर्वप्रथम सामना इसी प्रदेश को करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप यहां की सभ्यता, संस्कृति में समय परिवर्तनों के अनुसार बदलाव आते रहे। "ऋग्वेद के पंजाब में वह सारा भू–भाग इसी सीमा के अन्तर्गत था जो सिंध और इसकी सहायक नदियों में परिवेशिष्ट अथवा सिंचित था। इन नदियों के ऋग्वैदिक नाम निम्नलिखित रूप में पाए जाते हैं – सिन्धु (सन्धु), रावी (परूशकी), चिनाब (असूकी), सरस्वती (सरस्ती), जिहलम (जेलम), व्यास (विआप), सतलुज (सतद्रुव)।"[4] और पंजाब प्रदेश के महान शूरवीरों ने हमेशा सिकंदर, यूनानी, कनिष्क, महमूद गजनवी, गौरी, तैमूर, नादिरशाह और अहमद शाह अब्दाली से लेकर वर्तमान तक अपनी वीरता दिखाकर भारत देश की

---

1. खुशवंत सिंह, हिस्टरी आफ सिक्ख, पृ–5.
2. मदान, पन्ना लाल, पंजाब विच संगीत कला दा निकास ते विकास, पृ–4.
3. अरोड़ा, ए.सी, पंजाब का इतिहास, पृ–41.
4. गुरचरण सिंह, पंजाब दा ऐतिहासिक सर्वेक्षण, पृ–29.

रक्षा की क्योंकि पंजाब प्रदेश के लोग बड़े ही निडर साहसी हौसले वाले हर एक मुसीबतों का सामना करने वाले रहे हैं इस तरह की विपत्तियों का सामना करते हुए कभी पंजाब प्रदेश की सीमा बढ़कर अफगानिस्तान, बलोचिस्तान तक फैल गई इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के बहुत से सीमावर्ती प्रदेश सभी पंजाब के अंतर्गत आते थे। ''पंजाब प्रदेश जैसे समृद्ध राज्य की वजह से ही भारत को सोने की चिड़िया कहा गया। इसकी अमीरी ही हूंण, कुशान, अरब, तुर्की, ईरानी अंग्रेजी आदि विदेशियों के लोभ का कारण बनी।''[1] जिसके परिणामस्वरूप हर विदेशी आक्रमणकारी पंजाब के मार्ग से ही भारत में प्रविष्ट हुए और इसी कारण भारत का प्रवेश द्वार पंजाब प्रसिद्ध रहा। पंजाब को ही सभी आक्रमणकारियों के आघात सहन करने पड़े अनेक बार पंजाब नष्ट भ्रष्ट हुआ बहुत दफा यह वैभव पूर्ण धरती उजड़कर विरान हुई लेकिन इस प्रांत के निवासियों की वीरता, सहनशीलता और शमा शीलता ही थी जिसके परिणामस्वरूप बार बार नष्ट होने पर भी फिर से पंजाब की भूमि निर्मित होती रही और घोर विपत्तियों का सामना करने के बावजूद भी इस प्रदेश के निवासियों ने अपनी संस्कृति और सभ्यता पर आंच नहीं आने दी। अनेक उतार–चढ़ाव होने पर भी पंजाब प्रदेश जीवित ही नहीं बल्कि अत्यंत जीवित रूप में समस्त सुंदरता को अपने में समेटे हुए जीवित हैं।

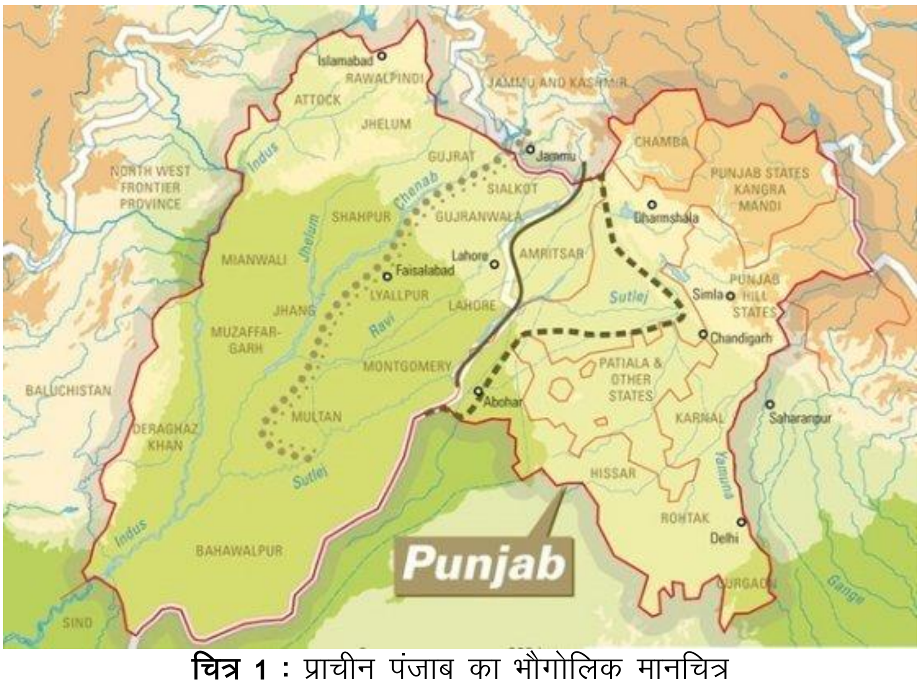

चित्र 1 : प्राचीन पंजाब का भौगोलिक मानचित्र

---

1. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–3.

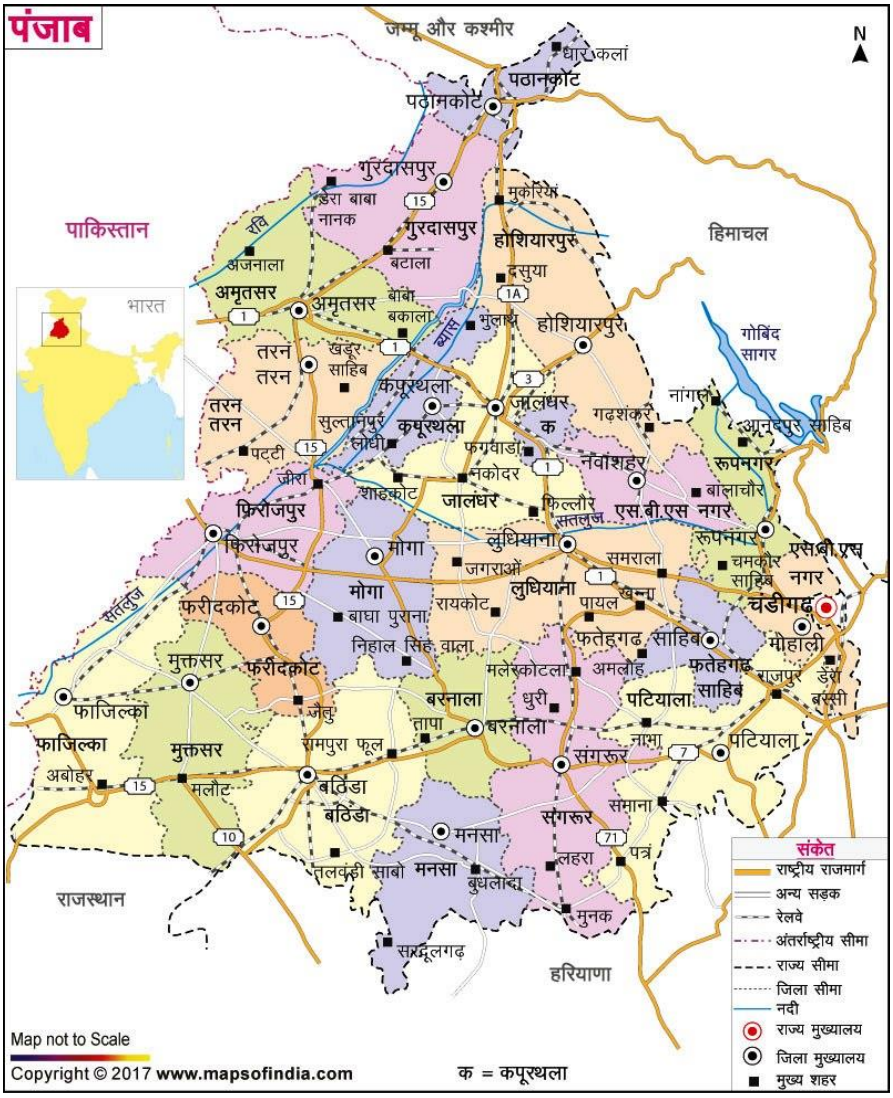

चित्र 2 : वर्तमान पंजाब का मानचित्र

कालांतर से परिवर्तन होते होते पंजाब प्रदेश की सीमाएं घटती ही गई भारत देश के जम्मू–कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा आदि प्रदेश पंजाब से अलग हो गए। इसके अतिरिक्त भारत विभाजन के पश्चात उत्तरी पश्चिमी सरहदी सूबा (पंजाब), सिंध आदि क्षेत्र भी इस प्रांत से पृथक कर दिए गए। समय की हुकूमतों की वजह से वर्तमान समय में पंजाब अब सिमट कर रह गया है। सीमा क्षेत्र के अधीन उतर की तरफ से जम्मू–कश्मीर और हिमाचल, दक्षिण में राजस्थान ,पूरब में हरियाना और पश्चिमी पंजाब की सरहदों से वर्तमान पंजाब घिरा हुआ है। पंजाब के मुख्य बड़े शहरों में अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना, पठानकोट, गुरदासपुर, होशियारपुर, फिरोजपुर और पटियाला जैसे इतिहासिक शहर स्थित हैं। इस धरती

की खुशहाल सभ्यता एवं संस्कृति, पंजाबी भाषा की स्वरलहरियों के प्रयोग फलस्वरुप पंजाब क्षेत्र के रूप में विशव प्रसिद्ध है।

1.3 पंजाब की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

पंजाब के प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर गंडा सिंह जो भारत के इतिहासकारों में से एक हैं अनुसार ''पंजाब की पावन धरती पर ही ऋग्वेद की रचना तथा सामवेद द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का गायन होता था तथा पंजाब की धरती प्राचीन समय से लेकर आधुनिक युग तक संगीत कला का मुख्य केंद्र बिंदु रही।''[1] पंजाब की धरती को वेदों का जन्म स्थल मानते हुए इतिहासकार नारंग जी कहते हैं कि ''इस पंजाब की धरती पर ही यहां के रहने वाले ऋषियों ने संसार के सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद की रचना की।''[2] डॉ आर के मुखर्जी लिखते हैं ''ऋग्वेद में सिंध और पंजाब के दरियाओं और सरस्वती का नाम भी कई बार आया है जिससे यह साबित होता है कि ऋग्वेद का उच्चारण आवश्य ही इन दरियाओं वाला देश पंजाब में ही हुआ होगा।''[3]

विद्वानों अनुसार अतीत में पंजाब का इतिहास केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व की सभ्यता या पंजाब की सभ्यता ही विश्व की सभ्यता थी। पंजाब प्रदेश की भूमि ज्योतिसर के स्थान पर भगवान श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को कर्म योगी बनने का महान गीता उपदेश दिया था पूरे भारत वर्ष को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को भगवत गीता जैसा महान ग्रंथ देने का श्रेय पंजाब को ही प्राप्त है इसके ईलावा द्वापर युग में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधाओं का उल्लेख स्पष्ट रूप से हमारे सामने आता है डॉक्टर गीता पैन्तल के अनुसार ''कौरव और पांडव पंजाब की धरती पर ही रहने वाले थे क्योंकि कुरुक्षेत्र हस्तिनापुर, करनाल आदि पंजाब के सीमा क्षेत्र में आते थे और संगीत में इनकी रूचि थी अर्जुन ने बनवास के समय कलीव के रूप में विराट के अंतपुर में नौकरी की और रानियों तथा राजकुमारियों को नृत्य सिखलाया।''[4] इसके अतिरिक्त वीर भीम मृदंग वाद्य का वादन करते थे महाभारत युग में भी ऐसे वीर योद्धा का संगीत कला से गहरा संबंध पंजाब प्रदेश की समृद्ध

---

1. मदान, पन्ना लाल, पंजाब विच संगीत कला दा निकास ते विकास, पृ–4.
2. वही.
3. वही, पृ–5.
4. पैन्तल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–6.

संगीत कला का प्रमाण है। महर्षि वेदव्यास जो महाभारत के रचनाकार थे, जो कुरुक्षेत्र के 'बतसाली' (पंजाब) नामक इलाके के रहने वाले थे, महाकवि कालिदास जिन्होंने शकुंतला और मेघदूत रचनाएं रची सरस्वती नदी के किनारे रहते थे। भगवान श्री कृष्ण की बंसी चाहे बाल्यकाल में वृंदावन क्षेत्र के इलाके में गुंजायमान हुई लेकिन उनका मुख्य कर्म स्थान तो पंजाब आंचल में स्थित था। घोर विपत्तियों से जूझते हुए फिर भी इस प्रांत के निवासियों ने अपनी सभ्यता संस्कृति एवं कोमल कलाओं को कहीं ना कहीं सुरक्षित रखा।

पंजाब प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की वारतालाप से पुष्टि होती है कि पंजाब की धरती महान व्यक्तितवों एवं युग पुरषों की वजह से प्रसिद्वि रही जिन्होंने ऐसी रचनाएं समाज को प्रदान की जो सारी मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत है इसके अतिरिक्त विभिन्न कलाओं के प्रति लगाव हर वर्ग के लोगों में था

1.4 पंजाब के संगीत का इतिहास :

संगीत परंपरा को लेकर पंजाब प्रदेश का योगदान क्या था या कैसे रहा इसके लिए इतिहास की गहराइयों में जाकर ज्ञात करने के प्रयास हेतु पंजाब प्रदेश के संगीत प्रति विषय में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना होगा। समृद्व पंजाब अपने स्वस्थ जलवायु, शुद्व वातावरण और उपजाऊ गुणों की वजह से ही प्रसिद्व नहीं बल्कि भाषा, विकास, शिक्षा, विज्ञान, कला प्रचार और संस्कृतिक तौर पर भी उन्नत होने के कारण यहां पर सर्वप्रथम कला और भाषा ने जन्म लिया और इसका विकास हुआ। सिंधु घाटी और आर्य जाति जैसी महान सभ्यताओं के जन्म लेने से ही पंजाब की भूमि पर वेदों की रचना हुई इसके अतिरिक्त मोहनजोदड़ो और हड़प्पा स्थानों की खुदाई से जो प्रमाण प्राप्त होते हैं उससे पता चलता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता कितनी उत्कृष्ट थी और संगीत कला काफी निखर कर सामने आई सिंधु घाटी की सभ्यता सिंधु नदी के किनारे स्थित होने की वजह से ही सिंधु घाटी सभ्यता नाम से सम्बोधित की जाने लगी। पंजाब की सिंधु घाटी की सभ्यता से प्रभावित होकर मिस्टर जॉन मांस कैली ने अपनी पुस्तक ''द फलो ऑफ इण्डियन म्युज़िक में लिखा है, कला का जितना विषद और गहरा ज्ञान सिंधु घाटी की सभ्यता में मिलता है इससे पूर्व के कालों में नहीं मिलता इस काल में गीतों का विकास हो

चुका था अनेक छंद बन चुके थे जो कि संगीतक रूप में गाए जाते थे खुदाई में एक ऐसी मूर्ति प्राप्त है जिसमें एक नारी गाती हुई मुद्रा में चित्रित है काव्य और संगीत कला का मिलन भी इस काल में हो चुका होगा संगीत और काव्या को निकट लाने में इस युग ने खास प्रयास किया होगा।"[1] एक और मत अनुसार पंडित जवाहरलाल नेहरू लिखते हैं "मोहनजोदड़ो और हड़प्पा इन दोनों जगहों की खोज एक इत्तेफाक की बात थी अभी भी इस सभ्यता के निशान हमें इतनी दूर फैली हुई जगहों में मिलें हैं जैसे पंजाब में अंम्बाला और पश्चिम में काठियावाड़, ऐसा यकीन करने की वजह है कि यह सभ्यता गंगा की चोटी तक फैली हुई थी। इस तरह यह सभ्यता ऊच्च भारतीय गौरव के लिए थी।"[2] किसी प्रदेश की संस्कृति एवं सभ्यता का अनुमान उसकी कलाओं से ज्ञात होता है जिस भूमि पर महान ऋषि मुनियों, गुरुओं, पीरों, भक्तों और विद्वानों अथवा योद्धाओं ने जन्म लिया हो उस प्रदेश में कलाओं का विकास होना स्वाभाविक है कोई भी कला एक रूप में समाज के समक्ष आती है उपरांत उसके विभिन्न रूप विकसित होते हैं उसका प्रचार बढ़ता है और कला के निर्धारित नियमों में विभाजित होकर ही उस कला के विकास में कार्यशीलता होती है जिसके परिणाम स्वरूप संगीत कला, चित्रकला, मूर्ति कला, भवन कला आदि समाज के सामने आई। संगीत और कविता यह दोनों प्राचीन कलाएं हैं परंतु पुरातन पुस्तकों व पांडुलिपियों पर दिखाए गए चित्रों से स्पष्ट होता है कि सभी कलाएं एक दूसरे की पूरक हैं इन सभी प्रकार की कलाओं द्वारा मानव अपने मन के भावों को व्यक्त करते थे और एक दूसरे के मनोरंजन के लिए सभी कलाओं की प्रस्तुति करते थे इसके अतिरिक्त अपने ईस्ट या देवी देवता को मनाने के लिए संगीत कला के माध्यम द्वारा भाव प्रकट करते थे। पंजाब की धरती पर जहां सिंधु घाटी और मोहनजोदड़ो जैसी सभ्यताएं विकसित एवं प्रचलित हुई, वहीं इस पवित्र भूमि पर वेदों की भी रचना हुई। वैदिक काल में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद चारों वेदों की रचना हुई वैदिक काल का प्रारंभ वेदों के आगमन से ही हुआ। इन वेदों में सामवेद पूर्ण संगीतमय था जो इस बात का प्रमाण है के वैदिक काल में लोक संगीत का ज्ञान रखते थे तभी सामवेद जैसे महान वेद

---

1. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ–55.
2. वही, पृ–51.

की रचना हुई इस बात की पुष्टि प्रसिद्ध इतिहासकार अनुसार, ''वैदिक कालीन संगीत में कंठ संगीत के अतिरिक्त वाद्यों के प्रयोग का भी उल्लेख मिलता है वाद्यों में मृदंग, वीणा, वंशी, डमरु आदि विशेषकर प्रचलित थे। गायन वादन के अतिरिक्त नृत्य की लोकप्रियता के संबंध में भी उल्लेख मिलता है।''[1] वैदिक कालीन सभी प्रकार की कलाओं के मूल में धार्मिक भावना निहित थी सामगान के मंत्रों के लिए पहले तीन स्वर जिन्हें उद्दात, अनुदात एवं स्वरित कहते थे धीरे–धीरे इन्हीं स्वरों के विकास से सात स्वर विकसित हुए क्योंकि वैदिक काल में ही सातों स्वर अस्तित्व में आ गए थे। पाणिनी शिक्षा व नारदीय शिक्षा अनुसार जिन सात स्वरों की रचना हुई उनका आधार उदात्, अनुदात और स्वरित है।

''उदाते निषादगान्धारोअनुदात रिषभदधैवतो
स्वर्रित प्रभवा हयेते षड़ज मध्यम पंचमः''[2]

उपरोक्त श्लोक इस बात की पुष्टि करता है कि वैदिक काल में संगीत कला का विकास उस समय के लोगों के बुद्धिमान होने तथा संगीत कला की लोकप्रियता का आभास कराता है। अतः इस बात की पुष्टि अच्छी तरह से हो जाती है कि वैदिक कालीन पंजाब में संगीत की स्थिति अच्छी थी। वैदिक काल में गंधर्व वेद, नाटवेद, रिक, प्रतिसाक्य सामसंहिता आदि ग्रंथों की रचना हो चुकी थी, भरत का नाटयशास्त्र जो के संगीत का आधार ग्रंथ है, ''भारतीय परंपरा अनुसार इसकी रचना चार वेदों के आधार पर हुई इसलिए इसे पांचवा वेद भी कहा जाता है।''[3] इस ग्रंथ में 36 अध्याय हैं, 28 से लेकर 33 अध्याय तक संगीत संबंधी विभिन्न तत्वों पर वर्णन मिलता है। प्राचीन वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल तक संपूर्ण भारतीय संस्कृति का केंद्र बिंदु पंजाब ही रहा जहां कला को विकसित होने का श्रेय पंजाब को जाता है यह कहना न्याय संगत होगा।

मध्यकाल में उद्भव भक्ति आंदोलन जो सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ और मानवता पक्ष के लिए निर्मित हुआ जिससे भारतीय संस्कृति एवं कलाओं को विकसित होने का अवसर मिला। पूरे भारतवर्ष से पक्षपात के बंधनों से ऊपर उठकर कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीरा, नामदेव, चौतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिदास गोपाल

---

1. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ–69.
2. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ–17.
3. गुरनाम सिंह, पंजाबी संगीतकार, पृ–5.

आदि भक्तों द्वारा समाज की दशा सुधारने का प्रयत्न किया जिसमें संगीत कला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भक्ति आंदोलन के फलस्वरूप जहां पूरे भारतवर्ष में विभिन्न संगीत की धाराओं का उद्गम हुआ उसी की भांति पंजाब की भूमि पर विभिन्न संगीत धाराएं प्रचलित हुई क्योंकि विदेशी आक्रमणों की वजह से विभिन्न संस्कृतियों का आदान–प्रदान यहां पर हुआ फलस्वरूप पंजाब में पहले से प्रचलित संगीत धाराओं के साथ साथ सूफी लहर का भी व्युत्पन्न हुआ जो आगे चलकर सूफी संगीत रूप धारण कर प्रचलित हुई। जिसने पंजाब की संगीत परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान देकर विश्व स्तर पर प्रसिद्धि हासिल की। इसके अतिरिक्त जिन भक्तों संगीतकारों ने पंजाब प्रांत की संगीत के द्वारा सेवा की जिसमें बैजू बावरा जैसे महान संगीतकार जो तानसेन के समकालीन माने जाते हैं उनका जन्म पंजाब के बजवाड़ा नामक गांव में हुआ जो होशियारपुर के रहने वाले थे जिनके बारे में फ्रांसिसीं लेखक गारसा दतिसी साक्षी ने हिंदी साहित्य के इतिहास में बैजू बावरा के बारे में संक्षिप्त वर्णन किया है "बैजू बावरा उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध संगीतकार थे उनका संगीतकारों और गायकों में अच्छा स्थान था और उन्होंने जनता के मन को मोह लेने वाले गीत भी लिखे।"[1]

संगीत के संदर्भ में महत्वपूर्ण नाम प्रसिद्ध युग पुरुष गुरु श्री गुरु नानक देव जी का आता है उससे पूर्व की शताब्दियों का इतिहास अंधकार में है प्राप्त तथ्यों के आधार पर पता चलता है कि 11वीं शताब्दी के पश्चात मुस्लिम शासन के प्रभाव के कारण राग संगीत पंजाबी आंचल में तकरीबन खत्म हो चुका था श्री गुरु नानक देव जी ने राग आधारित कीर्तन की प्रथा का सूत्रबद्ध कर राग संगीत को नया जीवन दिया इस काल में संगीत कला में रंजित मिरासी जाति के लोग इस कला द्वारा अपना व्यवसाय चलाते थे जो विद्वानों अनुसार हिंदू थे लेकिन मुस्लिम शासन स्थापित होने की वजह से धर्म परिवर्तन कर मुसलमान हो गए गुरु नानक देव जी ने हरी कीर्तन प्रचार के लिए मर्दाना नामक संगीतज्ञ जो रबाब नाम के वाद्य में निपुण थे रबाब के स्वरों को छेड़कर श्री गुरु नानक देव जी ने और भाई मरदाना जी ने आवाम को प्रभु भक्ति का संदेश दिया। राग और लय में बध हरि कीर्तन

1. मदान, पन्ना लाल, पंजाब विच संगीत कला दा निकास ते विकास, पृ–75.

शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया इस प्रकार राग संगीत समाज में फिर से प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त करने लगा।

उपरोक्त पंजाब प्रदेश के संगीत संबंधी वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि पंजाब के संगीत को विभिन्न कालांतर में बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ा, कभी किसी शासन में संगीत की प्रस्तुति बहुत गंभीर हो गई और कहीं मुस्लिम साम्राज्य में संगीत को वर्जित कर दिया गया कभी संगीत शासकों के मनोरंजन एवं विलास का साधन बन कर रह गया इसके अतिरिक्त संगीत कलाकारों द्वारा दरबारों या पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाकर व्यवसाय के रूप में अपनाया गया। कला से प्रेम रखने वाले वंशजों में संगीत कला पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही और विभिन्न संगीतक शैलियां इन वशंजों से निर्मित हुई क्योंकि विभिन्न घरानों की निपुणता विभिन्न तरह से थी कोई वंश गायन में वादन में और कोई नृत्य में निपुण था जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी इन वंशजो द्वारा संगीत कला का प्रचार–प्रसार हुआ जो कालांतर से घराना परंपरा में प्रवर्तित हो गई जिससे संगीत कला को संरक्षण प्राप्त हुआ। घरानों की ही देन है कि संगीत को उच्च शिखर तक पहुंचने का अवसर मिला और संगीतकारों को सम्मान प्राप्त हुआ जिससे पूरे विश्व भर में भारतीय संगीत ने प्रसिद्धि प्राप्त की।

1.5 पंजाब प्रदेश की रियासतें एवंम घराना परंपरा :

घराना शब्द की व्युत्पत्ति किसी वर्ग के आवास, निवास, कटुम्ब आदि शब्दों से निर्मित हुई साधारण भाषा में अगर कोई वर्ग अपनी विशेषताओं से दूसरे वर्ग की अपेक्षा भिन्न दिखाई पड़ता है तो उस वर्ग को उसके स्थान या उस वंश के किसी पूर्वजों के परिचय से संबोधन करते हैं। ''इसी की भांति घराना शब्द के बारे में डॉ. गीता पैन्तल कहतीं हैं कि घराना शब्द की व्युत्पति चिर परिचित शब्द 'घर' से प्राप्त हुई है। सामान्यतः 'घर' का अर्थ मकान अथवा अवास से लिया जाता है लेकिन लक्षणात्मक शब्द शक्ति से इसका व्यापक प्रयोग कुटुम्ब परिवार, वंश–परम्परा आदि अर्थों में भी होता है। धार्मिक वेदों में इस अर्थ में सम्प्रदाय शब्द का प्रयोग होता है। कला और साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों व शब्दकोशों में इस शब्द का अंग्रेज़ी

पर्यायवाची शब्द 'स्कूल' (school) है।''[1] घराने के विषय में प्रसिद्ध विद्वान उमेश जोशी जी लिखते हैं, ''घरानों की परम्परा का संगीत शिक्षा से अटूट सम्बन्ध है। एक युग तक या यूं कहिए कि काफी अरसे तक हमारा संगीत शिक्षण अध्ययन–अध्यापन इन घरानों के दायरों के अन्तर्गत चलता रहा है।''[2] ऐसा ही संबोधन कला क्षेत्र में भी महान संगीतज्ञों या उनसे संबंधित जगह के नाम से किया जाता है जिस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत में विभिन्न क्षेत्रों अथवा उनके महान संगीतज्ञ के नाम से संगीत घरानों का उद्भव हुआ। ''ऐसे ही पंजाब प्रदेश में भी संगीत कला प्रेमियों की कठिन साधना के फलस्वरुप ही पंजाब में आधे दर्जन से अधिक घराने अस्तित्व में आए। घरानों की इतनी अधिक संख्या किसी भी एक प्रांत में आज तक देखते में नहीं आई।''[3] अनेक संगीत घराने पंजाब की धरती पर विकसित हुए पंजाब की धरती पर दूसरे राज्यों की तुलना में अधिक संगीत घराने हुए जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि पंजाब के शासक वर्ग को कलाओं से प्रेम था पंजाब के विभिन्न शासकों के कारण भिन्न–भिन्न रियासतें पैदा हुई जहां कला प्रेमियों को आजीविका के रूप में आश्रय मिला और पूरे भारत से कला प्रेमी इन रियास्तों में कार्यरत होकर संगीत कला की साधना करते और प्रस्तुतियां देते। इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है मुस्लिम शासन काल दौरान कलाओं का विकास नहीं हो पाया और जब सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा कीर्तन परंपरा शुरू किए जाने पश्चात और महाराजा रणजीत सिंह के काल में पंजाब की रियासतों में सिख धर्म अनुयाई शासक थे वस्तुतः यदि भारतीय संगीत के रूप में नहीं तो कीर्तन रूप में ही भारतीय संगीत यहां पर पुष्पित पल्लवित होता रहा, इस प्रकार संगीत के संरक्षण और विकास में सिख शासक वर्ग की रियास्तों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन रियास्तों में पूरे भारत से संगीत साधकों का आना जाना रहता था और बहुत से संगीतज्ञ इन्हीं रियास्तों में कार्यरत थे। पंजाब की रियासतों में पटियाला रियासत, नाभा रियासत, कपूरथला रियासत, मलेरकोटला रियासत, फरीदकोट रियासत, जम्मू–कश्मीर रियासत आदि रहीं जिस से पंजाब प्रदेश के बहुत से घराने प्रचार में आए जिसमें पटियाला घराना, तलवंडी घराना,

---

1. पैन्तल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–121.
2. जोशी, उमेश, उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास, पृ–47.
3. वही, पृ–4.

कसूर घराना, हरियाणा घराना, लाहौर घराना, नाईआं दा घराना, अमृतसर घराना, रबाबी घराना, श्याम चौरासी घराना आदि पंजाब की विभिन्न रियासतों की देन ही हैं जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान तक पंजाब प्रदेश ने संगीत क्षेत्र में भारतीय संगीत को विश्व प्रसिद्धि दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंजाब प्रदेश की रियासतों में जहां सिख धर्म अनुयाई थे जिससे कीर्तन परंपरा को बढ़ावा मिला वहीं विभिन्न धर्मों या वर्गों से संबंधित संगीत कला प्रेमी भी रहे जिसमें से बहुत से घराने मलेरकोटला रियासत में स्थापित हो गए क्योंकि उस समय के मलेरकोटला के शासक मुस्लिम धर्म से संबंधित थे और सूफी संगीत के साथ साथ विभिन्न संगीतक घरानों को भी बहुत प्रोत्साहित करते थे। मलेरकोटला पंजाब प्रांत की विशेष ख्याति प्राप्त रियासत रही है जिसके शासक मुस्लिम अनुयाई थे इस रियासत में संगीत की हर एक शैली का विकास रहा। शासक वर्ग अत्यधिक संगीत प्रिय होने के कारण यहां के राजदरबारों में संगीतज्ञों को बहुत सम्मान प्राप्त हुआ इस रियासत के मूल पुरुष शेख–सर–उद्दीन सूफी प्रवृत्ति के मालिक थे स्वभाविक है उनका नाअत और कव्वाली की तरफ झुकाव होना इस रियासत के आधार पर ही मलेरकोटला के नाम से पंजाब में यह शहर आबाद है जहां सूफी संगीत के अंतर्गत संगीत शैलियां रियासत के उत्पन्न होने से लेकर वर्तमान काल तक चली आ रही हैं। ''आज भी मलेरकोटला अपने मुसलमान संगीत कलाकारों के लिए विशेष प्रसिद्ध है। यहां के कलाकारों में शास्त्रीय गायन कलाकार, ग़ज़ल, कव्वाली, लोकगीत, काफी आदि गायक कलाकार पाए जाते हैं।''[1] इस रियासत के प्रसिद्धि प्राप्त कव्वाली गायक कलाकारों में भाई फतेह मोहम्मद और अहमद कव्वाल आदि हुए हैं और वर्तमान समय में भी उनके वंशजों द्वारा संगीत परंपरा को चलाया जा रहा है। इसी की भांति सूफी मत के प्रभाव की बात की जाए तो फरीदकोट रियासत का नामकरण चिश्ती संप्रदाय के सूफी फकीर बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध रही इस रियासत के मुख्य शासक राजा बृजेंद्र सिंह और हरेंद्र सिंह अंतिम राजा हुए हैं जो सिख धर्म अनुयाई होते हुए भी सूफी फकीरों से प्रभावित थे। इसी कारण वर्तमान में फरीदकोट रियासत के आधार पर फरीदकोट शहर वर्तमान में प्रसिद्ध शहर है जिसका नामकरण मुस्लिम सूफी फकीर बाबा फरीद जी के नाम से किया गया है।

1. पैन्तल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–117.

इसी की भांति शाम चौरासी घराना जो विश्व ख्याति प्रसिद्ध है, श्याम चौरासी घराने को भी सूफी फकीर श्यामीशाह जी का आशीर्वाद प्राप्त है। शाम चौरासी घराने के प्रसिद्ध गायक नजाकत सलामत अली साहब इसी घराने से संबंधित हैं जिन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर पर पहुंचा कर भारत का नाम रोशन किया और पंजाब प्रदेश से संबंधित होने के कारण जहां शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार नजाकत सलामत अली खां साहब द्वारा किया गया वहीं सूफी संगीत संबंधित काफिओं का भी बाखूबी प्रचार किया। अतः कहना न्याय संगत होगा कि जहां भारत देश के भिन्न–भिन्न घरानों ने कला क्षेत्र में अपना योगदान देकर भारतीय संगीत का गौरव बढ़ाया वहीं पंजाब प्रदेश के संगीत घरानों ने भी संगीत कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और संगीत की हर विधा का प्रचार प्रसार पंजाब के संगीत घरानों में हुआ और विदेशी साहित्य एवं संगीत पर आधारित मौलिक संगीत शैलियों का जन्म पंजाब प्रदेश की धरती पर हुआ।

1.6 पंजाब के संगीत की विभिन्न सांगीतिक धाराएं :

भारतीय संगीत के केंद्रीय स्थान पंजाब की संगीत परंपरा ने जहां अपनी पुरातनता और समृद्धि द्वारा भारतीय संगीत को शिखर तक पहुंचाया वही यहां पर उद्भव संगीत की विभिन्न धाराएं जो हिंदुस्तानी संगीत का हिस्सा होने के साथ–साथ अपना विलक्षण और महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं संगीत अध्ययन की दृष्टि से अगर विभिन्न धाराओं का विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होता है कि यह संगीतक धाराएं केवल पंजाब प्रांत ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय संगीत की धरोहर है जो शास्त्रीय, अर्द्धशास्त्रीय एवं लोक संगीत के रूप में प्रवाहित होकर वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक विभिन्न प्रवर्तित विधाओं के रूप में निरंतर चल रही आ रही है ।

1.6.1 शास्त्रीय संगीत :

शास्त्रीय संगीत ऐसा गायन है जो शास्त्रों पर आधारित नियमों में रह कर प्रस्तुत किया जाए। शास्त्रीय संगीत का आधार राग है और राग के नियमों का पालन करते हुए भिन्न–भिन्न शैलियों के सिद्धांतों एवम् नियमों अनुसार गायन करना ही शास्त्रीय संगीत कहलाता है। शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ध्रुपद, धमार, ख्याल,

तराना आदि गायन शैलियों आती हैं। पंजाब की शास्त्रीय संगीत परम्परा में प्रचारित शैलियां भारतीय संगीत से भिन्न नहीं हैं बल्कि शास्त्रीय संगीत हेतु आने वाली शैलियों में हर प्रांत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी की भांति पंजाब क्षेत्र ने भी भारतीय संगीत की शैलियों में अपना अहम योगदान दिया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा वैदिक काल संगीत परम्परा सामगान से आरम्भ होकर जाति गायन, प्रबन्ध गायन रूप में विकसित होती हुई ध्रुपद गायन, ख्याल गायन के रूप में वर्तमान तक प्रवाहित है और यह बात भी स्वीकार करनी होगी कि भारतीय संगीत की बुनियाद तो सदियों पुरानी संगीत परम्परा सामवेद पर आधारित ही है,

जैसा कि इस अध्याय में पहले ही वर्णन किया गया है कि पंजाब भारत का प्रवेश द्वार होने की वजह से विभिन्न कालान्तरों में आक्रमणकारियों का भारत में प्रवेश होने के पश्चात् पंजाब की भूमि पर नई–नई सभ्यताएँ एवं संस्कृतियों उत्पन्न हुईं। विद्वानों की मान्यता अनुसार पंजाब की संगीत परम्परा ही उत्तर भारत की परम्परा रही। परिणामस्वरूप भारतीय संगीत की दो पद्धतियाँ : हिन्दोस्तानी संगीत और कर्नाटकीय संगीत प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो पूरे विश्व भर में भारतीय संगीत के रूप में प्रसिद्धि हासिल किए हुए हैं। भारतीय संगीत परम्परा के अन्तर्गत आने वाली गायन विधाएं एक ही बार में समाज के समक्ष नहीं आ पाईं। इसके लिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को वर्षों का समय लगा जिसमें हर क्षेत्र का अपना अहम स्थान है। परन्तु शास्त्रीय संगीत की सर्वविदित ध्रुपद, धमार आदि शैलियों के लिए यह निश्चित नहीं है कि ध्रुपद शैली पंजाब की देन है या किसी अन्य प्रदेश की। ध्रुपद शैली पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक अपना विकास कर चुकी थी। लेकिन इससे पूर्व भी ध्रुपद शैली किसी न किसी रूप में प्रचारित रही होगी ऐसा विद्वानों का मत है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार किसी विशेष शैली के प्रचार–प्रसार के लिए विशेष व्यक्तित्वों का नाम हमारे समक्ष अवश्य आ जाता है। उदाहारण के लिए राजा मानसिंह तोमर का शासन काल 1486 ई. में आरम्भ हुआ जिन्होंने ध्रुपद शैली के विकास के लिए विशेष कार्य किया। भगवान कृष्ण भक्त प्रसिद्धि संगीतज्ञ स्वामी हरिदास जी, जो सशक्त ब्राह्मण थे, का सम्बन्ध पंजाब से था, जिनकी पुष्टि डा. गीता पेन्तल द्वारा आचार्य बृहस्पति जी के कथन को अपनी पुस्तक में दिया है कि स्वामी हरिदास के पूर्वज मुल्तान, पंजाब के निकट उच्च ग्राम के निवासी थे। उनका

संगीत सम्राट तानसेन के गुरू होना भी पंजाब के लिए गौरव की बात है। इसी की भांति स्वामी हरिदास जी के शिष्यों में ध्रुपद शैली के विकास के लिए पं. दिवाकर और पं. सुधाकर का नाम अहम स्थान रखता है जो संगीत जगत में सूरज खां और चाांद खां के नाम से प्रसिद्ध हुए और उनकी संगीतक प्रतिभा के परिणामस्वरूप ही पंजाब में उनकी वंशज परम्परा द्वारा आगे चलकर ध्रुपद के चार घराने विक्सित हुए। इसके अतिरिक्त स्वासी हरिदास जी के शिष्य बैजू बावरा एक प्रसिद्ध संगीतकार का सम्बन्ध पंजाब से है, के बारे में डॉ. गीता पैंतल का कहना है, ''होशियारपुर जनपद (पंजाब) का बिजवाड़ा नामक गाँव है जहाँ के निवासी आज भी गर्व से कहते हैं कि हम बैजू बावरा के गाँव के रहने वाले हैं।''[1]

प्रसिद्ध ख्याल गायक सदारंग और अदारंग ख्याल गायन से पूर्व ध्रुपद गायन ही करते थे। इस तरह शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद धमार शैलियों का पंजाब की संगीत परम्परा में विशेष स्थान रहा और पंजाब के ध्रुपद कलाकारों ने अपनी विशेष भूमिका निभाई। पंजाब की शास्त्रीय संगीत परम्परा की लोकप्रियता या प्रसिद्धि परिणामस्वरूप पंजाब में ध्रुपद गायन के घराने प्रचार में आए।

पंजाब की संगीत परम्परा की एक विशेषता व विलक्षणता तब देखने में आती है जब सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरू नानक देव जी ने रागबद्ध गुरमति शैली की नींव 15वीं शताब्दी में रखी तो समकालीन भजन कीर्तन की शैलियां के लिए भी ध्रुपद, धमार जैसी शास्त्रीय शैलियों के सिद्धांतों का ही पालन किया जाता रहा और स्वाभाविक है श्री गुरू नानक देव जी ने भी रागबद्ध गुरमति शैली के गायन हेतु प्रचलित शास्त्रीय संगीत शैलियों के सिद्धांतों का पालन किया होगा। जिसकी पुष्टि ध्रुपद शैली के आधार पर गुरमति शब्द कीर्तन शैली के गायन रूप से स्पष्ट होती है। परिणामस्वरूप रागबद्ध कीर्तन शैली के माध्यम से प्रत्येक सिक्ख परिचित हुआ तो कहना न्यायसंगत होगा कि गुरमति शैली के माध्यम से ध्रुपद शैली का प्रचार–प्रसार पंजाब की शास्त्रीय संगीत परम्परा में हुआ। पीढ़ी दर पीढ़ी गायन करने वाले रागबद्ध कीर्तनकारों को ध्रुपद शैली आधारित शब्द कंठस्थ है जो उनको

1. पैन्तल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ–46

अपने बुज़ुर्गों से परम्परागत रूप में प्राप्त हुए हैं। इसी की भांति धमार गायन आधारित प्रमाण भी शब्द कीर्तन शैली में प्राप्त होते हैं।

ख्याल गायन की बात की जाए तो ख्याल गायन शैली के उद्‌भव एवं आविष्कार सम्बन्धी विभिन्न मत प्राप्त होते हैं जिसके अन्तर्गत सिक्खों के दसवें गुरू श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी द्वारा निर्मित ख्याल रचना भी मिलती है। उदाहरणार्थ :

मित्तर प्यारे नू हाल मुरीदां दा कहना,
तुद बिन रोग रज़ाईयां दा ओढ़ण
नाग निवासां दे रहणा।
सूल सुराही खंजर प्याला, बिंग कसाईयां दा सहणा
यारड़े दा सानू सत्थर चंगा, भट्ठ खेड़िआं दा रहणा ।।9।।

इस तरह स्पष्ट है कि शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत विभिन्न शैलियों को विकसित करने हेतु किसी दूसरे क्षेत्र की भांति पंजाब प्रान्त की संगीत परम्परा ने किसी विशेष शैली के विकास के लिए अपने क्षेत्र की गायन वादन कलाओं के अनुसार नए प्रयोग किए, जिससे किसी विशेष क्षेत्र की अपनी विलक्षण पहचान निर्धारित हुई। चाहे वह पंजाब की संगीत परम्परा में उद्‌भव हुई गायन शैली हो जो दूसरे क्षेत्र के संगीतज्ञों द्वारा अपनाए जाने के पश्चात् उस क्षेत्र की गायन, वादन और साहित्य कला के रूप में ज़्यादा प्रचलित हो गई हो। ऐसा ही शास्त्रीय संगीत परम्परा में हुआ। परन्तु फिर भी कुछ विशेष गायन शैली हर क्षेत्र की होती है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह गायन अंदाज़ या शैली किसी विशेष क्षेत्र की है। ऐसे ही गुरमत शैली के रूप में रागबद्ध शब्द कीर्तन शैली पंजाब की संगीत परम्परा में विकसित होकर विश्व–विख्यात हो गई।

1.6.2 उपशास्त्रीय संगीत :

जिस गायन में शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण हो और शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों से आज़ादी हो, उपशास्त्रीय संगीत कहलाता है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ठुमरी, दादरा, टापा, होरी, काफी आदि गायन के प्रकारों में भाव प्रस्तुतिकरण की विशेषता रहती है और साहित्य का विषय ईश्वरीय प्रेम के साथ–साथ समाजिक प्रेम भावना का चित्रण भी होता है। हर विद्या का

कलाकार ऐसे गायन प्रकारों को अपनी प्रस्तुति का हिस्सा बनाता है। इसी तरह पंजाब में ऐसे भाव प्रधान गायन की लोकप्रियता परिणामस्वरूप पंजाब अंग की ठुमरी, टप्पा, काफी आदि उपशास्त्रीय संगीत की गायन शैलियां विकसित हुई। इसके अतिरिक्त पंजाब के घरानेदार शास्त्रीय कलाकारों ने विश्व प्रसिद्धि भी हासिल की जिनमें पटियाला घराने के उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, उस्ताद बरकत अली खां साहिब, शाम चौरासी घराने के विश्व प्रसिद्ध कलाकार सलामत अली एवं नज़ाकत अली खां साहिब का नाम विशेष है।

ठुमरी गायन में जहाँ शब्दों के बोलबनाव का प्रस्तुतिकरण ज़्यादा होता था वहीं पंजाब के गुणीजन कलाकारों द्वारा ठुमरी गायन को नए अंदाज़ में प्रचारित किया गया। जिसके अन्तर्गत ठुमरी गायन में बोलबनाव के साथ–साथ बोलतान, खटका, मुर्की, तानों आदि का प्रयोग किया जाने लगा और तार सप्तक के स्वरों का प्रयोग भी पंजाब अंग की ठुमरी में प्रयोग किया जाने लगा जिनमें पंजाब के लोकसंगीत की झलक नज़र आती है जिसके परिणामस्वरूप ठुमरी गायन पूर्व अंग और पंजाब अंग दो रूपों में प्रचारित हुआ और भारतीय संगीत में ठुमरी के दोनों रूपों को श्रोताओं द्वारा स्वीकार भी किया गया जिसकी पुष्टि संगीत गुणीजनों अनुसार ''पंजाब अंग की ठुमरी (शैली) आज से लगभग चालीस वर्ष पहले इसी शताब्दी के चौथे दशक से लोकप्रिय हुई।''[1]

इसके अतिरिक्त ठुमरी की भांति दादरा गायन, दादरा ताल में गाये जाने के कारण विशेष स्थान बनाए हुए हैं। ठुमरी की बजाए दादरा गायन में लय की गति अधिक होती है। पंजाब अंग की ठुमरी की भांति काफी गायन शैली उपशास्त्रीय संगीत की विलक्षण गायकी है जो कि पंजाब की संगीत परम्परा की अपनी मौलिक शैली है जो काव्य रूप और गायन दोनों हैं। काफी गायन का आधार मुस्लिम सूफी फकीरों द्वारा रचित वाणी है जिसमें उन्होंने उस अल्लाह, ईश्वर सम्बन्धी आध्यात्मिक रहस्यों को ईश्क हकीकी के माध्यम से प्रस्तुत किया। ठुमरी, दादरा की तरह काफी गायन पंजाब की संगीत परम्परा का विशेष गायन है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है

1. भट्ट, विश्म्भरनाथ, संगीत पत्रिका, ठुमरी अंक, 1954, पृ. 2

कि जहाँ भारतीय संगीत में उपशास्त्रीय संगीत के गायन प्रकारों की अपनी विशेषता है वहीं ऐसे गायन रूपों के अधीन पंजाब की संगीत परम्परा के संगीतज्ञों ने अपनी मौलिक रचनाओं, भावनाओं और गायन के सूक्ष्म तत्वों को शामिल कर भारतीय संगीत को विश्वविख्यात कर लोकप्रिय बनाया है।

1.6.3 सुगम संगीत या लोक संगीत :

लोक संगीत विधा का भारतीय संगीत में विशेष स्थान है जिसके बिना किसी भी संगीत की कल्पना करना असंभव है। लोक संगीत किसी क्षेत्र के समाज का आईना होता है जो हमें उस वर्ग की पहचान करवाता है कि उस जाति के लोगों का स्वभाव कैसा है वहां का खान पान रहन सहन और क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था किन मौलिक कार्य पर आधारित है। लोक संगीत किसी भी संस्कृति और सभ्यता का महत्वपूर्ण अंग है लोक संगीत, लोक गीतों, लोक धुनों और नृत्य का समूह है। यह कला एक प्राकृतिक कला है जो लोगों में अपने आप जागृत होती है समस्त भारत अपने हर एक प्रांत के लोगों के लोकगीतों के लिए धनी होता है उसी तरह पंजाब प्रदेश भी अपने अमीर लोक संगीत एवं सभ्याचार की विशेषताओं से भारत देश को पूरी दुनिया में प्रसिद्ध किए हुए हैं किसी भी प्रदेश का लोक संगीत उस प्रांत के आबोहवा, वातावरण आदि बातों पर निर्भर करता है इसलिए कहना उचित होगा कि वह गीत जिसकी उत्पत्ति लोगों द्वारा हुई हो तथा परंपरागत तौर पर विरासत में मिली हो उसे लोक संगीत कहते हैं। लोक संगीत का संबंध किसी समाज के लोगों की आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है लोक संगीत प्रत्येक व्यक्ति के दुख सुख और भावनाओं के साथ परस्पर रूप से जुड़ा हुआ होता है जैसे किसी भी सभ्याचार और समाज से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति के लोक व्यवहार का रूप लोक गीतों में देखा जा सकता है लोक संगीत मानव मन की अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति है जबकि शास्त्रीय संगीत कठोर नियमो मे बंधा होता है इसलिए विद्वानों ने भारतीय संगीत की उत्पत्ति का स्रोत लोक संगीत को ही माना है लोक संगीत के धरातल पर शास्त्रीय संगीत का भवन निर्माण हुआ है भारत के प्रत्येक प्रांत अपने विशिष्ट लोक संगीत में धनी है वहीं पंजाब प्रांत का लोक संगीत अपनी विशेषताओं के कारण समस्त भारत के गले का हार बना हुआ है पंजाबी क्षेत्र के लोकगीत अपनी विशेष हृदयस्पर्शी स्वर सगतियों के कारण पूरे भारत में ही नहीं बल्कि विश्व

भर में प्रसिद्ध है। पंजाब क्षेत्र के लोक संगीत की लोकप्रियता फलस्वरूप भारतीय चित्रपट संगीत में भी पंजाब के लोक गीतों को महत्वपूर्ण स्थान मिला पंजाब के लोकगीतों मे बहुत से शास्त्रीय रागों का आभास मिलता है जिसमें पहाड़ी, आसा, मुल्तानी जैजैवंती माझ आदि। इन रागों की मुख्य स्वर संगतियां, पंजाब के लोक संगीत की विशेष धुनें ग्रामीण क्षेत्रों के लोक संगीत पर आधारित है जो लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत का स्वरूप धारण करने की प्रक्रिया में ये स्वरसंगतियाँ आंचल विशेष के नाम व अन्या आधार पर बदलती हुई रागों के रूप में स्वीकार की गई या यू कहना न्याय संगत होगा कि शास्त्रीय संगीत के रागों ने लोक धुनो से विकसित होकर कालांतर में शास्त्रीय स्वरूप धारण किया। पंजाब की बहुत सी लोक धुनों ने परिष्कृत होकर राग का स्वरूप ग्रहण किया लेकिन वे धुने स्वय राग विस्तार के आगाध सागर में लुप्त हो गई। राग आज भी विद्यमान है कौन सा राग किस लोक धुन की स्वरसंगतियों से अस्तित्व में आया यह कहना कठिन है केवल स्थान विशेष के नाम पर अभीहित होने के कारण हम उन्हें आंचल विशेष की देन समझते हैं। इसीलिए यदि जौनपुरी का संबंध उत्तर प्रदेश के जौनपुर से है राग पहाड़ी, पहाडी क्षेत्र से, मांड का संबंध मारवाड़ क्षेत्र से, तो मुल्तानी राग पंजाब के मुल्तान से संबंधित होने की संभावना भी विचारणीय है, शोरी मियां द्वारा अस्तित्व में लाया गया टप्पा भी उट हाकने वालों के लोक संगीत का ही प्रचलित रूप है। इसी प्रकार पंजाबी व मुल्तानी काफियां भी, जो पंजाब में उप शास्त्रीय संगीत विधाओं के अंतर्गत भी गिनी जाती हैं पंजाब के लोक संगीत की धुनों से ही विकसित हुई हैं पंजाबी अंग की ठुमरियों में खटके व मुर्कियां भी पंजाबी लोक धुनों की विशेष देन है। पंजाब के लोक संगीत की चर्चा पश्चात् सुगम संगीत के अंतर्गत विभिन्न शैलियों की चर्चा भी अनिवार्य है जिन्होंने पंजाब के संगीत को प्रचारित एवं प्रसारित करने, जनसाधारण में लोक संगीत की लोकप्रियता का झुकाव पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शुरू से ही साधारण लोगों द्वारा भिन्न–भिन्न युगों अथवा कालों में अनेक काव्य रचनाएं विभिन्न रूपों में लिखी गई जिसके फलस्वरूप इन रचनाओं के अनुसार कुछ संगीत की शैलियां प्रचार में आई पंजाब के लोक गीतों की धुनों ने अपनी प्राचीनतम रूप में गाए जाने वाली स्वर सगिंतियों का

स्वरूप अपनी स्वरावलियों में सुरक्षित रखा जिसका वर्णन विभिन्न प्रकार से किया जाता रहा है, जो कि आगे वर्णित किया गया है :

क) मुकक्तक लोकगीतः जिसके अंतर्गतः

1) समय चक्कर से संबंधित लोकगीत
2) रीति रिवाजों से संबंधित लोकगीत

ख) प्रबंधात्मक लोकगीतः जिसके अंतर्गतः

1) वीररस साहित्य के लोकगीत
2) प्रेम काव्य संबंधित लोकगीत

ग) स्फुटिक गीतः

इस तरह के गायन किसी विशेष श्रेणी के अंतर्गत नहीं आते प्रन्तु समाजिक जीवन से संबंधित गीत या लोक कथाओं पर आधारित भिन्न भिन्न विष्यों संबंधित गीतों का चित्रण ही इस श्रेणी के अन्तर्गत गायन किया जाता हैं।

1.7 पंजाब की भक्ति संगीत आधारित विभिन्न विधाएँ :

भक्ति संगीत जिसका लक्ष्य ही प्रभु की पूजा आराधना आदि बातों से है। भारतीय संगीत की बात की जाए तो इसके नियम ही भक्ति संगीत आधारित हैं। भारतीय भूमि पर वेदों में रचित ऋषि मुनियों द्वारा लिखित श्लोकों को सर्वप्रथम परमात्मा की आराधना के लिए गायन किया गया। उसके बाद धीरे–धीरे संगीत में स्वरों का उद्भव हुआ फिर उनका विकास सात सुरों में हुआ मध्य काल में उत्पन्न भक्ति लहर के माध्यम से संगीत के विकसित होने का कारण ही भक्तिमई काव्य रचनाएं थी जिसका गायन प्रभु भक्ति में लीन साधकों द्वारा किया गया जिसमें संत, साधू, फकीरों, भक्तों, गुरुओं आदि ने प्रचार–प्रसार कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसके फलस्वरुप भक्ति संगीत की विभिन्न शैलियां भी प्रचार में आईं जैसे भजन संगीत, गुरमत संगीत और सूफी संगीत। इन शैलियों का लक्ष्य परमात्मा की संगीत के द्वारा आराधना ही है परंतु समाज के अलग–अलग धर्मों के साथ जुड़े हुए लोगों द्वारा भक्ति संगीत की विभिन्न शैलियां प्रचार में आईं जिनका वर्णन इस प्रकार है :

1.7.1 भजन संगीत :

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की कल्पना भजन संगीत के बिना नहीं की जा सकती। भारतीय संगीत में भजन संगीत का उच्च स्थान है और वर्तमान तक प्रचलित गायन विधाओं में भजन संगीत शामिल है। किसी भी कार्य या संगीत कार्यक्रम में सर्वप्रथम भजन संगीत से आरम्भ किया जाता है जिससे भजन संगीत की अहमियत स्पष्ट हो जाती है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के अपने–अपने रीति–रिवाज़ों, भाषा, मान्यता अनुसार भजन संगीत की विशेषता है जिसके द्वारा उस वर्ग या समाज के लोग अपने ईष्ट देवता की पूजा आराधना करते हैं जो मनुष्य को आत्मिक आनन्द की अनुभूति करवाती है। भजन संगीत की महत्ता फलस्वरूप ही मध्यकाल में समाज की बुराईयों को खत्म करने के लिए भक्तों, संतों, गुरूओं ने मानवता को प्रेरित किया जिसमें भारत के सभी क्षेत्रों के संगीतज्ञों द्वारा अपनी भूमिका निभाई गई। भजन गायन की लोकप्रियता या प्रसिद्धि परिणामस्वरूप ही मध्यकाल को भक्तिकाल की संज्ञा दी जाती है जो भजन गायन की विशेषता को स्पष्ट करती है। इस तरह भारतीय संगीत में भजन गायन शैली के प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्नि क्षेत्रों के संगीतज्ञों ने अपने क्षेत्र की स्वरलहरियों, साहित्य एवं भाषा के आधर पर भजन संगीत के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया और वर्तमान में भी भजन गायन भारतीय संगीत की विभिन्न शैलियों में महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं।

इसी की भांति पंजाब की संगीत परम्परा में विभिन्न गायन की तरह भजन संगीत भी उतना ही लोकप्रिय है जिसकी पुष्टि इस बात से हो जाती है कि जहाँ पंजाब की विभिन्न संगीतक विधाओं की प्रस्तुतियों का प्रवाह है वहीं भजन संगीत कार्यक्रमों की विशेष प्रस्तुतियों का आयोजन अक्सर देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त भिन्न–भिन्न स्थानों पर बने हुए प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों पर समय–समय के त्यौहारों या अवसरों के अनुसार भजन गायन के विभिन्न रूपों का गायन, वादन होता रहता है। जिसमें पंजाब की संगीत परम्परा से जुड़े हुए विभिन्न शैलियों के संगीत–गुणीजन कलाकारों द्वारा शामूलियत की जाती है और बड़े ही जोश, उमंगों के साथ श्रोताओं और कलाकारों द्वारा पूजा अराधना के अन्तर्निहित भजन गायन सारी–सारी रात होता है और ऐसी स्वरावलियों एवं वादन का प्रयोग भजन संगीत में होता है कि साधारण जनमानस जो संगीत की समझ न होने पर भी सरलता से

भजन गायन में हिस्सा लेता है और अपनी भावनाओं को ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत कर आनन्द एवं शांति का अनुभव करता है जिसमें भजन संगीत की लोकप्रियता भारतीय संगीत के दूसरे क्षेत्रों की भांति पंजाब की संगीत परम्परा का महत्वपूर्ण अंग है।

1.7.2 गुरमत/गुरबाणी संगीत :

यह पंजाब की संगीत परम्परा की एक विलक्षण शैली है जिसने भारतीय संगीत के प्रचार में अपना विशेष योगदान देकर संगीत कलाकारों को सम्मान दिलाया। यह पंजाब की मौलिक गुरमत संगीत शैली है जिसे गुरबाणी संगीत भी कहा जाता है। सिख धर्म के उद्भव के समय से ही श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ की गई गुरमत कीर्तन शैली भारतीय संगीत के इतिहास में अपना विशेष स्थान रखती है। गुरमत संगीत शैली की सम्पूर्ण रचना, भारतीय संगीत की भांति गुरमत संगीत भी रागों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त गुरमत संगीत के अंतर्गत कीर्तन चौंकियाँ (गायन के विभिन्न पहर), मंगलाचरण, पड़ताल, राग माला आदि गुरमत संगीत के प्रकार हैं जो गुरबाणी कीर्तन की श्रेष्ठता को प्रकट करते हैं जिससे गुरबाणी रचनाकारों की विद्वता स्पष्ट होती है श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित वाणी सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को बयान करती है सारी रचना ऋतु मौसम मास मनुष्य के वास्तविक लक्ष्य आदि बातों से संबंधित अनुकूल रागों पर आधारित की गई है। गुरमत कीर्तन के साथ तंत्र वाद्य के रूप में दिलरूबा, ताउस तार शहनाई आदि और ताल वादय में जोड़ी तबला का प्रयोग किया जाता हैं। गुरबाणी गायन में दो गायक और एक वाद्य बजाने के लिए होता है। कालांतर के साथ कीर्तन शैली में परिवर्तन आना स्वभाविक है गुरमत या कीर्तन शैली वर्तमान में एक संगीत की विशाल परंपरा के रूप में पंजाब के संगीत स्तर को उच बनाने में योगदान दे रही है। पंजाब की इस विशाल गुरमत संगीत परंपरा के कारण हजारों सैकड़ों कीर्तनकारों को भारत सरकार, पंजाब सरकार, शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी आदि द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' पुरस्कार दिए जा रहे हैं जिससे गुरमत शैली की लोकप्रियता स्पष्ट होती है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब की गुरमत संगीत परंपरा भारतीय संगीत के विकास में अहम योगदान दे रही है।

1.7.3 सूफी संगीत :

सूफी संगीत ऐसी अध्यात्मिक, विलक्ष्ण एवं लोकप्रिय शैली है जो पंजाब की धरती पर विकसित एवं प्रसारित हुई। सूफी संगीत या सूफियाना गायन सूफी फकीरों द्वारा उस अल्लाह ईश्वर की इबादत से प्राप्त अनुभवों की विचारधारा है जिसके अन्तर्गत सूफी फकीरों ने उस अल्लाह ईश्वर को प्रेम के माध्यम द्वारा इश्क मिजाज़ी से इश्क हकीकी तक के सफर को अपनी वाणी/साहित्य के विभिन्न रूपों द्वारा रचित किया है जो कालांतर से सूफी परम्परा के प्रचार प्रसार हेतु सूफियाना गायन के रूप में प्रचारित एवं प्रसारित हुई और वर्तमान में चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अतः शोध प्रबंध का विषय सूफी संगीत पर आधारित होने के कारण सूफी संगीत के बारे में विस्तारपूर्णक जानकारी द्वितीय अध्याय में दी गई है।

उपरोक्त की गई वार्तालाप से स्पष्ट हो जाता है कि पांच नदियों से सिंचित पंजाब क्षेत्र भारत देश का अभिन्न अंग है। पंजाब की संगीत परंपरा भारतीय संगीत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विभिन्न क्षेत्रों की सभ्यता एवं संस्कृति के अंतर्गत संगीतक घरानों की विशेषता रहती है। इसी की भांति पंजाब क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति के अनुसार पंजाब की संगीत परंपरा में विभिन्न संगीतक घरानों की अपनी विशेषता होने के फलस्वरूप संगीत की विभिन्न धाराओं के अधीन शास्त्रीय संगीत, अर्धशास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के अंतर्गत विभिन्न गायन रूप प्रचलित हैं। भक्ति धारा या अध्यात्मिक संगीत के अंतर्गत पंजाब की संगीत परंपरा में भजन संगीत, गुरमत संगीत जनसाधारण में लोकप्रिय हैं। इसी तरह पंजाब की संगीत परंपरा में प्रचलित ईबादत रूपी सूफियाना संगीत भारतीय संगीत को विश्व ख्याति प्रदान किए हुए हैं।

———